प्रकाशन की तिथि 01.09.2017

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

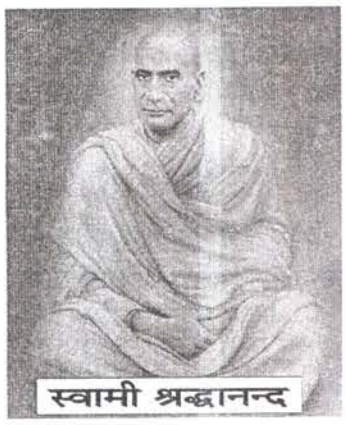
स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 40 अंक 9

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये
आजीवन शुल्क : 300 रुपये

सितम्बर 2017 विक्रम सम्वत् 2074 भाद्रपद-अश्विन

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री चतर सिंह नागर ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

दशहरा : विजयादशमी

– डॉ. देवेश प्रकाश आर्य

आश्विन मास में शारदीय नवरात्रों के पश्चात् दशवें दिन दशहरा अर्थात् विजयादशमी का पर्व मनाया जाता है। पौराणिक सम्प्रदायों की कल्पित मान्यता के अनुसार इस दिन श्रीरामचन्द्र ने लंकापति पापी रावण का वध किया था और इसी खुशी में विजयादशमी का त्योहार मनाया जाता है। अज्ञान की पराकाष्ठा देखिये कि कई शिक्षा बोर्डों की पाठ्य पुस्तकों में भी यही कहानी पढाई जाती है। बड़े खेद का विषय है कि शिक्षा बोर्ड ऐसे लेखकों की रचनायें कैसे स्वीकार कर लेते हैं, जिन्होंने सम्भवतः कभी रामायण पढ़ी ही नहीं और दन्त कथाओं के आधार पर यह लेख लिख दिये।

बाल्मीकि रामायण एवं अन्य रामायणों के अनुसार यह कहानी शतप्रतिशत असत्य है। बाल्मीकि रामायण के अनुसार श्रीराम, बाली वध के उपरान्त, सीताजी की खोज के बारे में सुग्रीव से कहते हैं कि–

पूर्वोऽयं वार्षिको मासः श्रावणः सलिलागमः
प्रवृताः सौम्य चत्वारो मासा वार्षिक संज्ञकाः।।

अर्थात् – हे सौम्य यह वर्षा काल का चौमासा उपस्थित हो गया है, जिस चौमासे का वर्षा करने वाला यह श्रावण मास है।

नायमुद्योगसमयः प्रविश त्वं पुरी शुभाम् ।
अस्मिन् वत्स्याम्यहं सौम्य पर्वते सह लक्ष्मण ।।

अर्थात्– अतः अब किसी प्रकार के उद्योग का समय नहीं है। इसलिए आप अपनी राजधानी किष्किन्धा में प्रवेश करें और तब तक मैं लक्ष्मण के साथ पर्वत की गुफा में निवास करूँगा।

कार्तिके समनुप्राप्ते त्वं रावण वध यतः।

अर्थात् – कार्तिक मास के प्रारम्भ होने पर आप रावण के वध का प्रयत्न करें।

बाल्मीकि रामायण के उक्त श्लोकों से यह भलीभांति स्पष्ट हो जाता है कि चौमासे का समय बीत जाने के बाद कार्तिक मास के प्रारम्भ में सीताजी की खोज प्रारम्भ हुई थी। कार्तिक मास के बीत जाने के पश्चात् हनुमान सीताजी की खोज में लंका गए थे और उनका पता लगाया था। तत्पश्चात् श्रीराम का वानर सेना के साथ समुद्र तट पर आना व सागर पर पुल आदि के निर्माण में कुछ समय निकल गया। यथार्थ में राम–रावण युद्ध पौष मास से प्रारम्भ होकर फाल्गुन मास के अन्तिम दिनों तक चला था। तब आश्विन मास शुक्ल पक्ष की दशमी को रावण का वध कैसे हो गया? जबकि उस समय युद्ध प्रारम्भ ही नहीं हुआ था। यह बड़े आश्चर्य की बात है।

वास्तविकता यह है कि विजयदशमी पर्व का रामायण अथवा रावण के वध आदि से कोई सम्बन्ध नहीं है। विजयदशमी पर्व मनाने के सामाजिक, शारीरिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक एवं ऋतु सम्बन्धी अनेक कारण हैं, जिनका संक्षिप्त वर्णन यहाँ निम्न प्रकार से दिया जा रहा है–

प्राचीन काल में वर्षा ऋतु प्रारम्भ होने पर क्षत्रिय राजा अपना विजय अभियान तथा व्यापारी लोग अपनी व्यापारिक यात्रा स्थगित कर देते थे, क्योंकि वर्षा ऋतु के कारण सभी मार्ग कीचड़ व दल–दल आदि से अवरूद्ध हो जाते थे। चौमासा समाप्त होने और शरद ऋतु प्रारम्भ होने पर क्षत्रिय लोग अपने अस्त्रों–शस्त्रों को साफ करके उन्हें तेज करने उपरान्त अपना आगामी विजय अभियान प्रारम्भ करते थे। व्यापारी लोग वर्षा काल में माल खरीदने के उपरान्त, शरद ऋतु के आगमन पर उसे बेचने के लिए अन्य प्रदेशों की यात्रा पर चल पड़ते थे। किसान अपनी खेती–बाड़ी व पशुओं की वृद्धि में संलग्न हो जाते थे। सन्त–महात्मा व विद्वान–उपदेशक धर्म प्रचार के लिए अपनी–2 यात्राओं पर निकल पड़ते थे। सभी जानते हैं कि शारदीय नवरात्रों के अन्त में दशवें दिन दशहरे का पर्व मनाया जाता है। वैदिक परम्परा के अनुसार नवरात्रों के दिनों में साधक यम–नियमादि का पालन करते हुए एवं अन्य यौगिक क्रियाओं द्वारा अपने शरीर, इन्द्रियों व अन्तःकरण आदि की शुद्धि करता है। साधक पाँच ज्ञानेन्द्रियों व पाँच कर्मेन्द्रियों पर सयंम करता हुआ अपने मन को वश में कर लेता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये पाँच अन्तःकरण के दोष हैं, रूप, रस, गन्ध, स्पर्श व शब्द ये ज्ञानेन्द्रियों के दोष हैं और जो इन पर संयम कर लेता है, उसी पुरूषार्थ का नाम वास्तविक विजयादशमी है। मानव शरीर में नौ द्वार हैं इनके अतिरिक्त एक दशवां गुप्त द्वार भी है, जिसे ब्रह्मरन्ध्र कहते हैं। यह हमारे शिर में तालु के ऊपर है। योग साधना द्वारा जब योगी समाधि की अवस्था को प्राप्त कर लेता है, तब मृत्यु के समय उसकी आत्मा दशवें द्वार ब्रह्मरन्ध्र से निकलती है और वह मोक्ष पद को प्राप्त कर लेता है। आध्यात्म की दृष्टि से यही यथार्थ विजयदशमी है। शारदीय नवरात्रों में आश्विन मास की एकम् से लेकर विजयादशमी तक एक ओर तमाशा भी होता है। उत्तरी भारत में लगभग सभी नगरों में नाटक मण्डलियाँ बनी हुई हैं। वे नाटक मंचन के नाम से रामायण कथा का मंचन रामलीला के नाम से करते हैं और संभवतः इन रामलीलाओं के चलन के बाद ही यह बात प्रचारित हुई है कि विजयदशमी को रावण का वध हुआ था। इसके अतिरिक्त इन तथाकथित रामलीलाओं में रामायण के महान् पात्रों का अभिनय ऐसे कलाकार करते हैं, जिनका कोई चरित्र नहीं होता और वे विभिन्न व्यसनों से ग्रस्त होते हैं। लोगों से कई तरह के हथकण्डे अपनाकर चन्दा वसूल किया जाता है। हज़ारों रूपये व्यय करके रावण, मेघनाद व कुम्भकर्ण के बड़े–बड़े पुतले बनावा कर उनमें आतिश–बाजी लगाई जाती है। विजयादशमी के दिन सायंकाल किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति, राजनेता अथवा किसी सन्त–महन्त के हाथों उन पुतलों को आग लगवाई जाती है। सब लोग चारों ओर खड़े होकर उन पुतलों के जलने का तमाशा देखते हैं। आज से लाखों वर्ष पूर्व त्रेता युग में देवी सीता लगभग एक वर्ष दुष्ट रावण की लंका में रही, फिर भी उसकी पवित्रता पर कोई आँच नहीं आई। किन्तु आज इस देश में क्या हो रहा है, यह सब भली–भाँति

शेष पृष्ठ 8 पर...

हमारे सभी सम्माननीय पाठकों को विजयादशमी की हार्दिक शुभकामनाएं।

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

'हमारी आत्मा के भीतर व बाहर होने पर भी हम ईश्वर का अनुभव क्यों नहीं कर पाते हैं?'

– –मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ईश्वरीय ज्ञान है जो ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा नाम वाले चार ऋषियों को दिया था। यह चारों ऋषि अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न हुए थे। वेदों के अनुसार ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। इन गुणों व विशेषणों वाला ईश्वर ही संसार की मनुष्य रूप में विद्यमान सभी जीवात्माओं के लिए उपासनीय, विचार, चिन्तन व ध्यान करने योग्य है। **वेद बताते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी है। इसका अर्थ है कि ईश्वर हमारे शरीर व जीवात्मा के भीतर भी है और बाहर भी है।** अब प्रश्न यह है कि यदि ईश्वर हमारे निकट व निकटतम है तो फिर हम इसे देख क्यों नहीं पाते और इसका अनुभव क्यों नहीं कर पाते? इस प्रश्न का यदि सही उत्तर मिल जाये और उसे हम समझ सकें तो ईश्वर विषयक हमारी सारी भ्रान्तियां दूर हो सकती हैं और हम सच्चे आस्तिक बन सकते हैं।

सृष्टि में हमें यह नियम दिखाई देता है कि जो वस्तु बहुत पास हो या फिर बहुत दूर हो, वह हमें दिखाई नहीं देती हैं। आंख के एक कोने में पड़ा सूक्ष्म व बारीक तिनका आंख के अति निकट होने पर भी आंखों को या आंखों से दिखता नहीं है। इसी प्रकार हम कुछ मीटर 200 से 500 या 1000 मीटर या कुछ अधिक दूरी तक की वस्तुओं को ही देख पाते हैं। इससे अधिक दूर की बृहद वस्तुएं हमें अधिक दूरी के कारण दिखाई नहीं देती हैं। यह भी ज्ञातव्य है कि हमें आंखों से स्थूल पदार्थ ही दिखाई देते हैं। सूक्ष्म पदार्थों में न केवल ईश्वर अपितु अनेक भौतिक पदार्थ भी दिखाई नहीं देते हैं। हम अपनी व अन्य शरीरों में विद्यमान जीवात्माओं को भी कहां देख पाते हैं? वायु में अनेक गैसों के परमाणु वा अणु होते हैं परन्तु वह इतने सूक्ष्म हैं कि उनका अस्तित्व होने पर भी वह हमें दिखाई नहीं देते। वायुमण्डल के अनेक सूक्ष्म किटाणु भी हमें दिखाई नहीं देते परन्तु सूक्ष्मदर्शी यन्त्र अर्थात् माइक्रोस्कोप से उन्हें देखा जा सकता है। हमारे रक्त में अनेक प्रकार के कण होते हैं जिन्हें हमारे चिकित्सक यन्त्रों की सहायता से स्पष्ट रूप में देख लेते हैं। ईश्वर इन सबसे अर्थात् सभी प्रकार के भौतिक कणों, अणु व परमाणुओं, यहां तक की जीवात्मा से भी सूक्ष्म है। इस कारण भी हम ईश्वर का दर्शन नहीं कर पाते। अतः यह सिद्धान्त है कि आंखों से दिखाई न देने वाले पदार्थों के अस्तित्व से इनकार नहीं किया जा सकता। यदि कोई करता है तो यही कहा जायेगा कि उसका ज्ञान सीमित है।

इससे पूर्व कि हम ईश्वर के अनुभव न होने संबंधी विषय की चर्चा करें, हम ईश्वर के दर्शन व प्रत्यक्ष पर कुछ और चर्चा कर लेते हैं। यह नियम है कि आंखों से गुणों का दर्शन होता है गुणी का नहीं। अग्नि को लीजिये, अग्नि में प्रकाश, गर्मी वा दाहकता तथा आकाश की दिशा में जाने का गुण होता है। इन्हें देख कर ही इसे अग्नि कहा जा सकता है। परन्तु यह प्रकाश व दाहकता आदि तो अग्नि के गुण हैं। इन गुणों वाली अग्नि तो किसी को दिखाई ही नहीं देती। इसी प्रकार से संसार की सभी वस्तुओं में जो गुण विशेष हैं, उन गुणों को उन पदार्थों में स्थापित करने व उन्हें नियम में रखने के कारण ईश्वर का ज्ञान भी उन सभी पदार्थों से होता है। हम संसार में नाना प्रकार के पदार्थों को देखते हैं। सब पदार्थों की रचनाओं में अन्तर है। यह अलग अलग रचनायें व उनके पृथक पृथक गुण इनके रचयिता का बोध व ज्ञान कराते हैं। विविध फूलों में अलग अलग रचना, आकर्षक रंग व मनमोहक आकृतियां तथा नाना प्रकार की सुगन्ध आदि विशेष गुणों को देखकर इसके कर्ता ईश्वर का ज्ञान होता है। संसार में जो भी रचनायें हैं, जिन्हें मनुष्य नहीं कर सकता, वह रचनायें अपौरुषेय कहलाती हैं। उनका रचयिता ईश्वर ही होता है, कोई पुरुष वा मनुष्य नहीं हो सकता। विचार करने पर यह सिद्ध होता है जड़ पदार्थ न किसी नियम का पालन कर स्वयं कुछ उपयोगी पदार्थ बन सकते हैं और न वह अपने भीतर उन पदार्थों के गुण ही उत्पन्न कर सकते हैं। पदार्थों की बुद्धिपूर्वक रचना करना व उनमें नाना प्रकार के गुण उत्पन्न करना व उन पदार्थों का विशेष नियमों के अन्तर्गत व्यवहार करना ईश्वर की व्यवस्था व रचनादि गुणों के कारण ही सम्भव होता है।

ईश्वर का अनुभव न होने का एक कारण यह भी है कि हम कभी भलीभांति ईश्वर के अस्तित्व व हमारे भीतर व बाहर उसकी उपस्थित पर चिन्तन ही नहीं करते। यदि करें तो उसका अनुभव अवश्य होगा। ब्रह्माण्ड में अनन्त सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि लोक लोकान्तर अपौरूषेय सत्ता अर्थात् ईश्वर द्वारा रचित है। पृथिवी पर सब पदार्थ अग्नि, वायु, जल व आकाश आदि भी ईश्वर रचित हैं। मनुष्य, पशु व पक्षियों आदि को भी वही बनाता व जन्म देता है। अन्न, फल व वनस्पतियों आदि तथा गोमाता में दुग्ध को भी परमात्मा ही सर्वत्र बनाता है। यह सभी रचनायें परमात्मा संसार में सर्वत्र, दूर दूर व पूरे ब्रह्माण्ड में करता है। इससे उन सभी स्थानों पर उसकी उपस्थिति सिद्ध होती है। इसका कारण यह है कि रचना वहीं होती है जहां कि रचनाकार व रचना की सामग्री उपस्थित हो। इस प्रकार से विचार करने पर ईश्वर सर्वव्यापक, निराकार, सर्वातिसूक्ष्म, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ व सच्चिदानन्द आदि सिद्ध होता है। जब ईश्वर के विषय में इस प्रकार तर्क पूर्वक विचार करते हैं तब यही अन्तिम उत्तर मिलता है कि संसार व सभी अपौरूषेय पदार्थों का रचयिता ईश्वर है। इसके बाद हमें ईश्वर को अनुभव करना ही शेष रह जाता है। किसी पदार्थ व सत्ता की कहीं उपस्थिति को अनुभव करने के लिए मन को उस वस्तु में लगाकर विचार व ध्यान करना होता है। यदि हमारा ध्यान हमारे सामने घट रही घटना में उपस्थित न हो तो आंखे खुली होने पर भी हमें उसका ज्ञान नहीं होगा। एक पान लगाने व बेचने वाला अपने काम में व्यस्त है। उससे किसी ने पूछा कि यहां से कोई बारात तो नहीं गई? वह उत्तर देता है और कहता है कि साहब मुझे पता नहीं, मेरा ध्यान तो पान लगाने में व्यस्त था। इस उदाहरण का प्रयोग करते हुए जब हम गम्भीरता से ईश्वर के वेद वर्णित गुणों को अपनी आत्मा के बाहर व भीतर अनुभव करने हेतु विचार व चिन्तन अथवा ध्यान करेंगे तो कुछ समय बाद निश्चय ही हमें ईश्वर की उपस्थिति का ज्ञान होगा।

इसी तथ्य व विधि का उपयोग करते हुए ऋषियों ने ईश्वर के ध्यान व सन्ध्या आदि की विधियां लिखी हैं। आंखें बन्द कर मन को ईश्वर के नाम व गायत्री मन्त्र आदि का अर्थ को स्मरण करते हुए जप करने व सन्ध्या के मन्त्रों के अर्थों पर विचार करते हुए ईश्वर का ध्यान करने से ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव उपासक वा ध्याता को होता है। जब हम आंखे बन्द कर ईश्वर को **'धियो यो न प्रयोदयात्'** कहते हैं तो हमारे मन में अपने प्रश्न व समस्या विषयक अनेक प्रकार के विचार आते हैं। कई बार हम बहुत सी बातों को भूल जाते हैं तो हम मन को उस विषय में लगा कर उसे स्मरण करने की चेष्टा करते हैं। कुछ समय लगता है और हमें वह भूली बात स्मरण हो आती है। हमें लगता है कि ईश्वर आत्मा में विस्मृत बात का स्मरण कराने में आत्मा व बुद्धि की सहायता करते हैं। हम प्रतिदिन अपने लेखों के विषय के चयन पर विचार करते हैं। कई बार आसानी से विषय उपस्थित हो जाता है और कई बार घंटो तक भी कोई विषय नहीं आता। फिर अचानक आ जाता है। ईश्वर आत्मा में है, अतः वह अपने नियम व व्यवस्था से हमारी सहायता करता है। बात सहायता मांगने व उसके लिए ईश्वर का ध्यान, विषय का ध्यान व उसके अनुरूप कर्म करने की है। विद्वान इस विषय पर और अधिक प्रकाश डाल सकते हैं व विषय को सरल बनाकर समझा सकते हैं। देहरादून में वैदिक साधन आश्रम तपोवन के कीर्तिशेष स्वामी दयानन्द जी ने एक बार सुनाया था कि विदेशों में रहे एक बहुत बड़े डॉक्टर ने उन्हें बताया था कि वह आज तक नहीं जान सके कि सड़क पर ठोकर लग कर गिरा मनुष्य कई बार मर क्यों जाता है और कई बार तीसरी मंजिल से गिरे बच्चे को कुछ विशेष चोट क्यों नहीं लगती हैं। ऐसी घटनायें हमारे जीवन में भी हुई हैं। भूकम्पों में भी ऐसे आश्चर्यजनक चमत्कार देखने को मिलते हैं। कई कई दिनों बाद लोग भवनों के मलवे में से जीवित बाहर निकल आते हैं, अस्तु। इतना तो तय है कि हमें ईश्वर की उपस्थिति को अनुभव करने के लिए अपने मन व आत्मा को परमात्मा के ध्यान में लगाना पड़ेगा। ध्यान करते हुए जब मन व आत्मा परमात्मा से एकाकार हो जायेंगे, हमारा ध्यान ईश्वर में स्थिर हो जायेगा, विचलित नहीं होगा तब हमें ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव अवश्य होगा।

पाठक यदि ऋषि दयानन्द द्वारा वेद मन्त्रों के आध्यात्मिक अर्थों सहित आर्याभिविनय आदि का पूरे मनोयोग से स्वाध्याय करेंगे तो उन्हें ईश्वर की उपस्थिति का निश्चय हो जायेगा, ऐसा हम अनुभव करते हैं। ऐसा नहीं है कि वेदों का अध्ययन, सन्ध्या व यज्ञ का अनुष्ठान, महात्माओं के उपदेशों का श्रवण व आत्मचिन्तन करने से कुछ नहीं होता है। यदि कुछ न होता तो सारा संसार नास्तिक होता। मनुष्यों के आस्तिक होने के अनेक कारण हैं। बुद्धिजीवी व वेद के ज्ञानी मनुष्यों के आस्तिक होने का कारण उनके स्वाध्याय से उत्पन्न संस्कार व ईश्वर का सर्वत्र विद्यमान होना तथा सृष्टि की रचना व व्यवस्था आदि कार्य ही हैं। आईये, प्रतिदिन प्रातः व सायं ईश्वर का ध्यान–चिन्तन करने का संकल्प लें। ऐसा करेंगे तो निश्चय ही ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव होगा। ओ३म् शम्।

फोन:09412985121

सम्पादकीय

– आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

विगत अगस्त मास आर्यों के लिए अतीव महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस मास में वेद पारायणयज्ञों तथा वेदों के प्रचार–प्रसार के लिए देश–विदेश की सभी आर्य समाजों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। वेदों में प्राणिमात्र के लिए परमात्मा द्वारा प्रदत्त निर्भ्रम, पवित्र ज्ञान का उपदेश किया गया है, जिसके स्वाध्याय, चिन्तन–मनन द्वारा जीवात्मा धर्मार्थकाममोक्ष रूप फलों को प्राप्त कर दुःख से आत्यन्तिक निवृत्ति पा सकता है। वेदों में स्थित यह पवित्र ज्ञान मानव मात्र के लिए है। अन्य साम्प्रदायिक ग्रन्थों की तरह इसमें जाति, धर्म, वर्गवाद के लिए कोई स्थान नहीं है। जगद् रचयिता परमात्मा संसार के समस्त मनुष्यों को वेद के स्वाध्याय का अधिकार देता है किसी जाति या सम्प्रदाय विशेष को नहीं। महर्षि दयानन्द ने वेदों का पुनरुद्धार करके प्राणिमात्र को इसके स्वाध्याय की प्रेरणा दी क्योंकि सबका हित इसमें सन्निहित है। इस श्रावणी पर्व के अवसर पर प्रत्येक आर्य और आर्य समाज परमात्मा की इस वेदवाणी के प्रचार–प्रसार का पावन संकल्प लेकर इस कर्तव्य की पूर्ति के लिए पुरुषार्थ करता है। वैदिक साहित्य के स्वाध्याय, कथा–प्रवचन तथा ज्ञानी पुरुषों की सत्संगति से जीवन को सही ढंग से जीने की कला प्राप्त होती है। महर्षि का यह दृढ़ मन्तव्य है कि– "वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" जब तक आर्य जाति अपने इस धर्म के पालन में लगी रही, सारा विश्व और मानव समाज सुख की पराकाष्ठा पर रहा। कालक्रम से जैसे–जैसे स्वाध्याय हीनता का प्रमाद बढ़ता गया, मानव जाति नाना प्रकार के मतों, सम्प्रदायों में विभक्त होकर पथभ्रष्ट और दुःख ग्रस्त होती गई। अतएव हमारे पूर्वज ऋषियों ने आत्मशुद्धि और आत्म कल्याण के लिए वेदों का स्वाध्याय अनिवार्य बताया है। देश और समाज कल्याण के लिए समर्पित आर्य समाज जैसी परोपकारिणी संस्था का यह कर्तव्य है कि वह सारे मानव समाज को वेद और वैदिक धर्म की शिक्षाओं से परिचित कराये। इसके लिए आर्यों को सजगता के साथ आगे बढ़ना होगा तभी "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के लक्ष्य की प्राप्ति हो सकेगी। इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए महर्षि ने आजीवन पुरुषार्थ किया। वे संसार के कल्याण के महत्वपूर्ण साधन के रूप में वेद और वैदिक ज्ञान को ही मानते थे। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि वेद निर्भ्रम और स्वतः प्रमाण हैं। ऋषि अपनी कालजयी कृति "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" में लिखते हैं– " क्योंकि वेद ईश्वर के रचे हुए हैं और ईश्वर सर्वज्ञ, सर्व विद्यायुक्त, तथा सर्वशक्ति वाला है, इसलिए उसका कथन ही निर्भ्रम और प्रमाण के योग्य है। और जीवों के बनाये ग्रन्थ स्वतः प्रमाण के योग्य नहीं होते, क्योंकि वे (जीव) सर्व विद्यायुक्त और सर्वशक्तिमान नहीं होते, इस लिए उनका कहना स्वतः प्रमाण के योग्य नहीं हो सकता।" महर्षि की इस मान्यता को ध्यान में रखकर सभी आर्य जनों को इसके लिए कृत संकल्प होना चाहिए तभी इस पर्व को मनाने की सार्थकता है।

शिक्षक दिवस

हमारी भारतीय ज्ञान परम्परा में गुरु व आचार्य को बहुत बड़ा सम्मान मिला है मनुष्य के जीवन में यदि सबसे कीमती चीज कोई है तो वह ज्ञान है ज्ञान के ही आधार पर वह शून्य से शिखर तक की यात्रा को तय करता है ज्ञान बिना जीवन साश्सात् पशु समान हो जाता है। ज्ञान की प्राप्ति हमें आचार्य व गुरु से होती है। आचार्य अपने अन्दर निहित ज्ञान में एक शिष्य का पुनर्निमार्ण करता है।

प्रथम जन्मदाता तो हमारे माता–पिता ही होते हैं उनके तप त्याग समाज से हमारा पालन पोषण होता है लेकिन केवल जन्म ले लेना संसार में पर्याप्त नहीं है एसे जन्म लेने वाले तो बहुत से पुश पक्षी भी हैं। जन्म के बाद दूसरा जन्म आचार्य के गर्भ से होता है जिसमें आचार्य समस्त विद्याओं से परिपूर्ण एक शिक्षित व संस्कार युक्त बालक का निर्माण करता है यही बात आचार्य चाणक्य ने कही थी कि शिक्षक साधारण नहीं होता शिक्षक तो सम्पूर्ण राष्ट्र का निर्माता होता है।

वह बालक आगे चलकर अपने–जीवन को एक सुगन्धित पुष्प की भाँति बनाता हुआ सारे संसार को प्रकाशित करता है। तब जाकर हम पूर्ण जन्म को प्राप्त कर पाते हैं। इसका मतलब हमारे जीवन में माता–पिता के बाद यदि किसी का सर्वाधिक योगदान है तो वह हमारा शिक्षक है, जो संस्कार हमें बचपन में मिल जाते हैं उन्हीं शिक्षा संस्कारों पर हमारे पूरे जीवन की नींव टिकी रहती है **अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलकया** लेकिन दुर्भाग्य है हमारे समाज का कि आज समाज में शिक्षक को स्तर निरन्तर गिर रहा है शिक्षक को एक नौकर समझकर उसके साथ व्यवहार हो रहा है जब तक हम शिक्षक का मान सम्मान नहीं करेंगे तब तक ज्ञान के भी अधिकारी नहीं बनेंगे गीता में भगवान के कहा है कि श्रद्धावान लभते ज्ञानम् अर्थात श्रद्धावान व्यक्ति ही ज्ञान को प्राप्त करता है। अतः इसे शिक्षक दिवस को प्रतीक मानकर शिक्षक का सम्मान करने का संकल्प लें तभी हमारी ज्ञान विज्ञान की समृद्ध परम्परा आगे बढ़ पाएगी और हमारा राष्ट्र शैक्षिक उन्नति कर पाएगा ।

तैतिरीयो पनिपद में आचार्य कहता है कि याव्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयो पास्यानि नो इतराणि अर्थात् हे शिष्य यदि मेरे अन्दर जो जो दोष पूर्ण व्यवहार है उसे तुम ग्रहण मत करना तथा जो श्रेष्ट आचरण है वही तुम ग्रहण करना इतना उदारवादी उपदेश और क्या हो सकता है।

समावर्तन के समय आचार्य शिष्य को प्रतिज्ञा दिलाता है कि सत्य वह, धर्माचर, स्वाध्यायाद् मा प्रमदितव्यम आदि। अर्थात् हे शिष्य तुम अपने जीवन में धर्म का आचरण कभी मत त्यागना सत्यवादी रहना, और वेदादि सत्य शास्त्रों का स्वाध्याय नित्य करते रहना यही तुम्हारी भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति का मूल आधार होगा।

–पं. रुकमपाल शास्त्री
गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली

14 सितम्बर 2017 गुरुवार को हिन्दी दिवस मनाया जाएगा।

हिन्दी के ऐतिहासिक अवसर को याद करने के लिए हर साल 14 सितम्बर को पूरे देश में हिन्दी दिवस मनाया जाता है। इसको हिन्दी दिवस के रूप में मनाना शुरु हुआ था क्योंकि वर्ष 1949 में 14 सितम्बर को सवैधानिक सभा के द्वारा अधिकारिक भाषा के रूप में देवनागरी लिपि में हिन्दी को स्वीकृत किया गया था।

हिन्दी दिवस क्यों मनाया जाता है... ?

देश में हिन्दी भाषा की महत्ता को प्रदर्शित करने के लिए पूरे भारत में हिन्दी दिवस मनाया जाता है। भारत में हिन्दी भाषा का बड़ा इतिहास है जो इण्डों यूरोपियन भाषा परिवार के इण्डों आर्यन शाखा से सम्बद्ध रखता है। भारत की सरकार ने देश की आजादी के बाद मातभाषा को आदर्श के अनुरूप बनाने के लिए एक एक्ष्य बनाया अर्थात् हिन्दी भाषा को व्याकरण और वर्तनीयुक्त करने का लक्ष्य। इसे भारत के अलावा मारीशस पाकिस्तान सूरीनाम, त्रिनिदाद और कुछ दूसरे देशों में भी बोली जाती है। यह 258 मिलीयन लोगों द्वारा मातृभाषा के रूप में बोली जाती है और ये दुनिया की 5वीं लम्बी भाषा है।

14 सितम्बर प्रत्येक वर्ष एक कार्यक्रम के रूप में मनाया जाता है, क्योंकि भारत की संविधान सभा द्वारा 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी भाषा (देवनागरी लिपि में लिखित) भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में उपयोग करने का निर्णय भारत के संविधान द्वारा (जो 1950 में 26 जनवरी को प्रभाव में आया है) वैध किया गया था। भारतीय संविधान के अनुसार, देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी भाषा के पहले भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में अनुच्छेद 343 के तहत अपनाया गया था।

–सुरेश चुघ

पेगान अरब (इस्लाम से पूर्व का अरब)

– ब्रह्मदेव भाटिया

हर्ष वर्धन (606 ई. से 647 ई.) भारत के महान सम्राटों में से एक थे। उनके शासन काल में एक महा विद्वान चीनी यात्री ह्वेन सांग भारत आया था। हर्ष वर्धन शैवधर्मावलम्बी था परन्तु ह्वेन सांग के प्रवचनों से प्रभावित होकर उसने बौध धर्म के महायान सम्प्रदाय की दीक्षा ली थी। परन्तु उस ने किसी भी धर्म का परि त्याग नहीं किया था। वह बुद्ध सूर्य तथा शिव तीनों की आराधना करता था। वह हिन्दू धर्म तथा बौद्ध धर्म दोनों का उपासक बना रहा।

हज़रत मुहम्मद साहेब (610 ई. से 632 ई.) तक अरब में इस्लाम धर्म के प्रर्वतक रहे। इस्लाम से पूर्व अरब का नैसर्गिक सामाजिक स्वरूप (धर्म, समाज, तथा संस्कृति पेगान कहलाता था) इस्लाम के उदय के साथ अरब से पेगानों के सास्कृतिक स्वरूप का पूर्णतः विलोप हो गया। वर्तमान में एक विद्वान लेखक ने इस्लाम पूर्व के अरब के पेगानों के जीवन के कार्य कलापों तथा वैचारिक परम्परा के विषय में परिश्रम पूर्वक खोज कर लिखा है।

भारत वर्ष में दीर्घकाल तक इस्लाम धर्मावलम्बियो का शासन रहा तथा जनता के एक बड़े भाग ने इस्लाम को स्वीकार किया। ऐसी परिस्थिति में भारतवासियों के लिए इस्लाम पूर्व के अरब के सामाजिक जीवन को जानना लाभप्रद रहेगा। यह लेख "पेगान अरब" इसी दिशा में एक प्रयास है।

इस्लाम का जन्म स्थान अरब प्रायद्वीप है। इस्लाम के अनेकों तीर्थ स्थान अरब में हैं। अरब प्रायद्वीप एशिया के दक्षिण पश्चिम में है। यह एक मकस्थलीय प्रायद्वीप है जिसमें कोई नदी नहीं है। प्रायद्वीप के पश्चिम में लाल सागर दक्षिण में अरब सागर पूरब में फारस की खाड़ी तथा ओमान की खाड़ी है। प्रायद्वीप पर लाल सागर के समानान्तर एक पर्वत श्रृंखला हजाज़ नाम से है। इस पर्वत श्रृंखला तथा लाल सागर के बीच तिलामल नाम की एक सकरी मैदानी पट्टी है। पर्वत श्रंखला के उत्तर में सीरिया तथा दक्षिण में यमन देश है। अतीत काल से अरब के लोग ऊंटों पर सामन लाद कर, तिहामह की मैदानी पट्टी से होते हुए सीरिया तथा यमन के बीच व्यापार करते रहे हैं। हजाज़ पर्वत की एक घाटी में मुसलमानों का पावन तीर्थस्थान मक्का है। मक्का में इस्लाम का परम पावन वन्दय स्थान 'काबा' है। मक्का से 200 मील उत्तर में दूसरा तीर्थ स्थान मदीना है। मुसलमान जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा (हज) करना मज़हबी फर्ज़ समझते हैं। लगभग 1500 वर्ष पूर्व अरब का सामाजिक तथा धार्मिक रूप वर्तमान से पूर्णतः भिन्न था। तब अरब के लोग उनका धार्मिक रूप तथा समाज पेगान कहा जाता था।

इस्लाम धर्म के प्रवर्तक हज़रत मुहमद साहेब का जन्म सोमवार 22 अप्रैल 571 ई. को मक्का में हुआ था। जब वह 40 वर्ष के हुए तो एक देवदूत (फरिश्ते) गैबरील ने उन्हें स्वर्ग से ईश्वरीय सन्देश ला कर देने शुरु किए। यह सन्देश मु.सा. को 610 ई. से 652 ई. तक (22 वर्ष) प्राप्त होते रहे। 632 ई. में मु. सा. का देहान्त हो गया। इन ईश्वरीय सन्देशों का संकलन "कुरान शरीफ़" कहा गया। कुरान शरीफ़ को मानने वाले मुसलमान तथा उन का धर्म इस्लाम कहलाया ।

इस्लाम से पूर्व अरब का सम्पूर्ण नैसर्गिक रूप (संस्कृति, धर्म, समाज) का नाम पेगान था। इस्लाम के उदय के साथ अरब के नैसर्गिक रूप पेगान का पूर्णतः लोप हो गया।

डा. बृज बिहारी कुमार ने अपनी नई पुस्तक the derstancling Islam में एक पूरा अध्याय " Glimpses of the pre-Islamic Pagan Culture of Arabia" लिखा है। उनकी पुस्तक के तथ्य तथा वृतांत "इब्न इ शाक" सरीखे अरब इतिहासकारों के लिखे ग्रन्थों मे दिए तथ्यों तथा वृतांतों पर आधारित हैं।

अरब पेगान संस्कृति का इस्लाम के उदय के साथ इतनी पूर्णताऐं विलोपन हुआ कि पेगाम संस्कृति को बताने वाला कोई पेगान नहीं बचा। पेगानों के विषय में जो कुछ भी जानकारियां प्राप्त होती हैं वह पेगानों के बाद के इस्लामी साहित्य से प्राप्त होती हैं। इस्लाम के दो ग्रन्थ 'कुरान शरीफ़" तथा "हदीस" इसमें विशेष सहायक हैं। प्रकृति संग मनुष्य का सम्पर्क, सम्बन्ध, सम्बधता तथा सहचार मनुष्य को सांस्कृतिक विकास की ओर अग्रसर करता है। इस सम्बधता तथा सहचार में प्रकृति के स्वरूप द्वारा प्रदत सहानुभूति तथा सहयोग की परिस्थितियां मनुष्य के सांस्कृतिक विकास के स्तर तथा स्वरूप को निर्धारित करती हैं। मनुष्य सांस्कृतिक विकास की राह पर कुछ अग्रसर होने के पश्चात किसी अलौकिक शक्ति की तृष्णा अनुभव करने लगता है जो उसकी अन्तर की शक्तियों एवं क्षमताओं को बल प्रदान करे। यह तृष्णा मनुष्य को कभी प्रकृति के नाना रूपों जैसे सूर्य, चन्द्र, नदी, पर्वत, वृक्ष, जीव आदि पर आस्था रख उनकी वन्दना करने लगता है, कभी उस की कल्पना में अनेक देवी देवता स्थान पाते हैं मनुष्य उनकी प्रतिमाएं बना उन की आराधना करने लगता है, कभी वह ज्ञान की बीहड़ सीमाओं में प्रवेश कर ज्ञान की जटिल व्याक्षाओं से अपनी आत्मा की तृष्टि करता है।

हर परिस्थिति में मनुष्य के अन्तर के सांस्कृतिक विकास का स्तर तथा रूप प्रकृति के सहानुभूतिपूर्ण सहयोगी परिस्थितियों पर निर्भर करता है। संसार क सभी भागों में प्रकृति ने मनुष्य को सांस्कृतिक विकास की परिस्थितियां प्रदान की हैं। विकास के एक चरण पर पहुंच कर मनुष्य ने अपनी आस्था के रूपों को स्थापित किया। सामान्यः मनुष्य ने इसे धर्म कहा। हर स्थान के मानव की आस्था का स्वरूप उसके स्वाभाविक विकास का चरण है।

इस्लाम पूर्व अरब में तीन प्रकार के धर्मों की आस्था के लोग रहते थे। पेगान, यहूदी तथा क्रिस्तान (ईसाई)। पेगान अरब का बहुसंख्यक प्रतिनिधि समुदाय था। अरब की मूल संस्कृति पेगानों के कार्यकलापों से परिलक्षित होती थी। पेगान शब्द, रोमन शब्द पेगस क्रिषिक्षेत्र, अग्रेज़ी शब्द पीज़ेन्ट किसान एक ही मूल के शब्द हैं। अरब के पेगान अनेक कबीलों में बंटे हुए थे। हर कबीले का अपना देवी या देवता था। हर देवी देवता की अपनी प्रतिमा थी। हर कबीले के लोग अपने देवता को अपने सुख साधन का कारण मानते थे। वह अपने देवता के पूजन के साथ अन्य सभी देवताओं का आदर करते थे। वह मानते थे कि सभी देवताओं के आपस में मधुर सम्बन्ध हैं।

अल्लाह–ता–अलाह पेगानों के लिए सर्वोच्च देवता था। यह स्वर्ग तथा पृथ्वी का रचियता था। यह सभी पेगानों का राष्ट्रीय देवता था। यह कुरैश कबीले का राष्ट्रीय देवता भी था। कष्ट की घड़ी में सभी पेगान अल्लाह की वन्दना करते थे। सहज सामान्य परिस्थिति में पेगान अपने कबीले के देवता की ही स्तुति करते थे। संसार के सभी आस्थावान मानव समुदायों की भांति अरब वालों की आस्था के संसार में बहु देव वाद ने स्थान पातिया था। अल्लाह–ता–अलाह (सब से वरिष्ठ देवता) के अतिरिक्त अरब पेगानों के कुछ महत्वपूर्ण देवतानिम्र थे – हुबल यह मानव रूप में वर्षा का देवता था। इसे सीरिया से लाया गया था।

यह निम्र देवताओं का मुख्य देवता था। वाध मानव रूप में यह देवता स्वर्ग का प्रतिनिधि था। सुवाह नारी रूप में यह प्रलय पूर्व की देवी थी। याउक इस देवता की प्रतिमा को घोड़े की प्रतिमा के नीचे स्थापित करते थे नासर यह देवता बाज़ पक्षी के रूप में पूजा जाता था। अल हुजा अल लात मनात इनका वर्णन कुरान शरीफ़ में भी है। पेगान इन्हें अल्लाह की कन्याएं मानते थे।

दूवार इस देवी की प्रतिमा युवा महिलाओं की प्रिय थी। वह दल बनाकर इस प्रतिमा की परिक्रमा करती थीं। हब हब इस विशाल शिला पर ऊंटों की बलि दी जाती थी। ज़ाफ़ा पर्वत की प्रतिमा इसाफ़ तथा मारवा पर्वत की प्रतिमा नाइला अरबों को बहुत प्रिय थीं। मुहम्मद साहेब ने इन्हें नष्ट करने की आज्ञा दी थीं। परन्तु अरब इन पर्वतों पर जाने से रोके न जा सके तथा इन पर जाना आज भी हज की एक प्रमुख परम्परा है।

काबा में 365 प्रतिमाएं थीं जिनकी वन्दना पेगान करते थे। काबा में एक काला पत्थर आज भी है। मान्यता है कि यह स्वर्ग से लाया गया था तथा सफ़ेद था। पापी हज यात्रियों के चुम्बन से काला पड़ गया है। पेगान (इस्लाम पूर्व के अरब) अरबों की देव परम्परा भारतवर्ष की कुल देवता ग्रह देवता, ग्राम देवता के समान थी।

हदीस से ज्ञात होता है कि पेगान अग्नि पूजा (अब्द–अल–शमस) तथा सूर्य की पूजा (अब्द–अल–उज़ा) करते थे।

पेगानों (इस्लाम पूर्व के अरबों) के नैतिक स्वरूप का ज्ञान इस्लामी साहित्य से होता है। पेगान अन्याय को सहन नहीं करते थे। अनैतिक रूप से कमाए धन का मन्दिर में उपयोग करना बुरा मानते थे। किसी को धोखा देना झूठ बोलना बुरा मानते थे। भूखे के समय किसी को भोजन देना सत्कार्य मानते थे। जीवन में प्रतिष्ठा को अधिक महत्व देते थे। प्रतिष्ठा के लिए प्राण देने का विचार रखते थे। दासों को मुक्त करना, ऊंटों को दान में देना सत्कर्म मानते थे। पर्यावरण की रक्षा के लिए वृक्षों की देखभाल करना तथा बाग़ लगाना उचित मानते थे।

– शेष अगले अंक में

मानव शरीर में ऊर्जा के स्त्रोत

मानव शरीर बड़े भाग्य से मिलता है। यह शरीर केवल हाड़-मांस का पुतला ही नहीं इसके अन्दर अनेक खज़ाने भरे हुए हैं। जो कुछ इस संसार में दिखाई देता है और कुछ इतना सूक्ष्म है जो हम अपनी आँखों से नहीं देख सकते। ऊर्जा के स्रोत इसी शरीर के भीतर निहित हैं जो स्थूल शरीर को चलाते रहते हैं। इसके अतिरिक्त यही ऊर्जा अध्यात्म अभ्यास करने से भी निःसृत होती रहती है। मनुष्य इस शरीर का लालन-पालन करके बड़े-बड़े असम्भव कार्य कर सकता है। वह पर्वतों के शिखर पर चढ़ सकता है। समुद्र के तल में जाकर अनेक प्रकार के अमूल्य पदार्थ प्राप्त कर सकता है। आज के युग में जो शरीर के लिए सुख साधन उपलब्ध हैं वे सब मानव की चेष्टाओं और बुद्धि की ही उपज हैं। ऐतरेय उपनिषद् के ऋषि लिखते हैं कि सृष्टि की रचना के समय ईश्वरीय शक्ति ने जब सभी ज्ञानेन्द्रियों की रचना करके उन्हें पृथ्वी लोक में जाने के लिए अनेक पशु-पक्षियों, जीव-जन्तुओं के पुतले दिखाए पर उन्हें कोई भी पसंद नहीं आया, पर जब मानव का पुतला दिखाया तो सहर्ष उस में घुस कर जाने के लिए तैयार हो गए। वास्तव में देखा जाए तो इस शरीर में इतनी गंदगी भरी हुई है कि उसे छूने में घृणा होती है। ईश्वर की कृपा से जो ऊपर चमड़ी चढ़ा दी गई उसने इसे सुन्दर और प्रभावशाली बना दिया।

अध्यात्म क्षेत्र में उन्नति करने के लिए यह ऊर्जा के स्रोत बहुत ही सहायक होते हैं। जो हमारे शरीर के निचले तल से शुरु होकर ऊपर ब्रह्म रन्ध्र तक जाते हैं। योगी लोग इन्हीं स्रोतों से ऊर्जा प्राप्त कर ब्रह्म लोक तक पहुँचने में सफल हो जाते हैं।

योग शास्त्र में ऊर्जा के शरीर में छः चक्र बताए गए हैं परन्तु हठ योग में यह अष्ट बताए गए हैं। यह चक्र सुषुम्णा नाड़ी के भीतर मध्य में स्थित अति सूक्ष्म कमला कार है। नाड़ी जो डाक्टर लोग कहते हैं वह नहीं, यह तो कोशिकाओं से भी अधिक सूक्ष्म है। यह सभी नस नाड़ियाँ गुणात्म होकर सारे शरीर में प्रत्येक अंग को ऊर्जा प्रदान करती हैं। शरीर में छः चक्र हैं :-

1. मूलाधार :-यह रीढ़ की हड्डी के अन्तिम सिरे और मलद्वार पर आधारित है। इसका मुख्य तत्त्व पृथ्वी है। यह चक्र शरीर से मल निकालने की क्रियाओं पर नियन्त्रण रखता है। ताकि शरीर में संतुलन बना रहे।

2. अधिष्ठान चक्र :-यह चक्र त्रिक अर्थात 3 अंगों पर कमर, पीठ और रीढ़ की हड़ी पर आधारित है। इसका मुख्य तत्त्व जल है। यहाँ से प्राप्त ऊर्जा कामवासना, जनेन्द्रियाँ, मैथुन और यौनाकर्षण पर नियन्त्रण रखती है। यह सभी तत्वों पर घूमती रहती है। यह यौन और प्रजनन के कार्य, जनन की क्षमता और मौलिक रचनात्मक कार्यों पर शासन करती है। प्रेरणा देती है और शक्ति देती है।

3. मणिपुर चक्र :- यह चक्र नाभि पर आधारित है। इसका मुख्य तत्त्व अग्नि है। यह चक्र हमारी पाचन क्रिया पर शासन करता है। यह हमारे आमाशय पक्वाशय, उदर और जठर को ऊर्जा देता है। अग्नि तत्त्व के कम और अधिक होने से मानव रोगी हो जाता है।

4. अनाहत चक्र :- यह चक्र हमारे हृदय पर आधारित है। इस का मुख्य तत्त्व वायु है। यह हृदय भी रक्त लेने और भेजने वाला जो स्थूल शरीर में है नहीं है। यह सूर्य से मिलते जुलते कार्य करता है। यह ऊर्जा रक्त संचालन और श्वास को भीतर लेने और बाहर निकालने की प्रक्रिया को नियन्त्रण में रखता है। इसके अतिरिक्त शरीर प्रतिरक्षक (Immune) क्रिया को सहायता देता रहता है। श्वास की प्रक्रिया को ठीक तरह से गति देता है। और उस पर शासन करता है। संतुलन बिगड़ने से लय और ताल खराब हो जाती है। और मनुष्य बीमार पड़ जाता है।

(क) हरित चक्र :-यह चक्र चौथे और पाँचवें चक्र के बीच हृदय से तीन अंगुल नीचे छाती के सामने भाग में स्थित है। यह रक्त को ललाई देता है। इसे सूर्य का अनुचर भी कहते हैं। कुछ ऋषि इसे सातवां चक्र बताते हैं।

(5) विशुद्ध चक्र :- यह चक्र गले पर आधारित है। इस का मुख्य तत्त्व आकाश है। यह मनुष्य स्वर-यंत्र और सांस की नली जो फेफड़ों से शुरु होकर नाक तक जाती है, उस पर नियन्त्रण रखता हैं। यह वाणी के रचना तन्त्र, इच्छा शक्ति, और संकल्प शक्ति के केन्द्र को प्रभावित करता है। यह पाँच चक्र रीढ़ की हड्डी के साथ-साथ चलते हैं।

(6) आज्ञा चक्र :- यह चक्र आँखों के बीच भृकुटी पर आधारित है। इस का मुख्य तत्त्व मन है। यह मनुष्य के दिमाग स्नायु केन्द्र (Nerve Centre) को प्रभावित करता है और उन पर शासन करता है। इसे लोग तीसरा नेत्र भी कहते हैं। यह चक्र जरा-जीर्णता, क्षण-भंगुरता के पंखों का परिचायक है। यही तन्त्र धैर्य, बल, तेज व शक्ति देता है। साहस प्रदान करता है। इस तन्त्र के कमज़ोर होने से मानव अधिकार, विकल, उत्तेजित और व्यग्र हो जाता है। मानव को ओजस्वी भी यही बनाता है। इसके ऊपर तो ब्रह्म रन्ध्र है जहाँ पहुँच कर मानव महान् बन जाता है। कुछ लोग यहाँ पर आठवाँ चक्र मानते हैं और इसी पथ से निर्वाण प्राप्त करते हैं। यहाँ पर सत्य अर्थात् परमात्मा का निवास है। आज भी बहुत प्राणायाम के मंत्र मूलाधार चक्र से ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओं सत्यम् बोलकर गायत्री मंत्र बोलते हुए अपने पैरों को छूते हुए बांये पाँव से दायें पाँव से ऊपर उठाते हुए अपना ध्यान मूलाधार चक्र के पास ले जाते हैं। इसी तरह दोहराते हुऐ जप करते हैं। इन्हें यह सफलता की कुंजी दिखाई देती है।

संकल्प से सिद्धि

पूर्ण रुपेण समर्पण से शिव संकल्प से सिद्धि हो सकती है। जियो-अनन्तकाल तक जियों पर पर-हित के लिये जियो। जो कार्य करो उसमें स्वार्थ की बू तक न आने पाये। उर्दू की कहावत है – नेकी कर – कुएं में डाल। वेद विद्या का कथन भी यही है कि दान कर पर दूसरे पर दान का अहसास न होने पाये।

हमने अपने जीवन काल में पढ़ा, देखा सुना और अनुभव किया है कि निःस्वार्थ सेवा का फल बहुत मीठा और चिर स्थायी है, अब बात व्यवहार की आती है। ये बातें सिद्धन्त रूप में अच्छी है पर व्यवहार में व्यक्ति असफल हो जाता है। ज़रा-सा प्रलोभन आया तो सिद्धान्त धरा का धरा रह जाता है।

हम ने राजनीति में देखा है-जन-जन तक हमारे राजनीतिज्ञों का लक्ष्य एक था- स्वाधीनता-कोई दूसरा लक्ष्य था ही नहीं। कोई स्वार्थ नहीं या केवल देश को स्वाधीन कराना है, यही एम मात्र लक्ष्य था। सभी स्वतन्त्रता सेनानी तन, मन, धन यहाँ तक कि अपना सर्वस्व दाव पर लगा देने के लिये तत्पर थे। इस लक्ष्य के प्रति पूर्ण रूपेण समपित थे जिसके परिणाम स्वरूप उनको सिद्धि प्राप्त हुई इसके मूल में हमारे पूर्वजो के हमे दिये गये संस्कार थे। उन्होंने कहा-"पराधीन सपने हूं सुख नाही " स्वाधीनता का कोई विकल्प नहीं है पराधीनता की अपेक्षा स्वाधीनता हजार गुना अच्छी है।

अनगिनत बलिदान हुए, हज़ारों लाखों जिनके कोई नाम तक किसी को याद नहीं अपनी मातृ-भूमि पर न्यौछावर हो गये फिर भी स्वाधीनता प्राप्त होती गयी क्योंकि संकल्प शिव संकल्प था।

तत्पश्चात् परिस्थितियो ने करवट बदली। जिन लोगों ने निःस्वार्थ से प्रयत्न किये, यातनाएं सही उनका समय के साथ लोप होता गया। अब राजनीति स्वार्थी लोगों के हाथ में आ गयी। अब जातिवाद, क्षेत्रवाद भाषावाद धार्मिक मतभेद छुआ-छूत आदि सब उभर कर सामने आ गये। हर जाति, क्षेत्र, भाषा भाषी, धार्मिक नेता, पिछड़ा वर्ग अर्थात सभी अपने-अपने स्वार्थ में लगे है कि शक्ति उनको मिले, मंत्री पद पर उनका अधिकार होना चाहिए, सब लोग इसी खींचतानी में लगे है।

जब तक हमारा देश उल्लिखित तत्वों से निजात नहीं पाता तब तक किसी संकल्प की सिद्धि नहीं हो सकती, उस स्थिति अर्थात निःस्वार्थ भाव से देश की सेवा करने, पर हित सेवा करने के भाव जागृत करने के लिए हमें पूर्वजों द्वारा दिये गये संस्कारों पर ध्यान देना होगा आज पूर्वजों के द्वारा संस्कारों का स्थान तो टी.वी. ने ले लिया है, पश्चिमी सभ्यता हमारे जीवन के हर कार्य कलाप मे परिलक्षित होती है। हम पूर्ण रूपेण भौतिकवादी बन गये है। अध्यात्मवाद से अब हमारा नाता टूट चुका है।

हमें स्मरण रखना चाहिए कि मन की शान्ति के बिना सुख नहीं मिल सकता। हम शारीरिक भोग-विलास सुख के जितनें मनचाहे साधन जुटा ले पर आत्मिक सुख नहीं मिलेगा शारीरिक भोग अस्थायी है। जैसे आयु वृद्धावस्था में पहुची, इन्द्रियां शिथिल हो गई। शारीरिक भोग भी नदारद हो गये। अतः आत्मिक सुख ही स्थायी सुख है। आत्मिक सुख जीवन के अन्तिम क्षण तक साथ रहता है। सच्चा सुख, स्थायी सुख प्रभु की उपासना, श्रेयस्कर कर्म और परहित जीवन -यापन में है, इस प्रकार के शिव संकल्प से सिद्धि हो सकती है।

आवश्यकता

आर्य समाज, डी-103, उदय सिटी, पल्लवपुरम फेस-2, मेरठ में एक आर्य पुरोहित की आवश्कता है। मासिक वेतन रु. 5000/- (विद्युत सहित ठहरने की व्यवस्था समाज की होगी) भोजन व्यवस्था पुरोहित की स्वयं की होगी।

-विक्रम सिंह, प्रधान मो. 9412632812

"अन्तिम संस्कार और पर्यावरण" विषयक लेख ऐसी भी हैं वैदिक सिद्धान्त सिक्त सन्तानें

सुप्रसिद्ध मर्कयोगी समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने निर्वाण से पूर्व ही जो वसीयतनामा लिखकर अपनी स्थानापन्न परोपकारिणी सभा को दिया था उसमें उन्होंने जहाँ अन्य बातें लिखी थी वहाँ अपने अन्त्येष्टि संस्कार के बारे में भी स्पष्ट यह लिखा था –

"जैसे इस सभा को मेरी और मेरे सब पदार्थों की यथाशक्ति रक्षा और उन्नति करने का अधिकार है, वैसे ही उसे मेरे मृतक शरीर के संस्कार का भी है। वह न तो गाड़ा जाय, न जल–प्रवाह किया जाय और न जंगल में फेंका ही जाय। ' संस्कारविधि' में वर्णित वेद विहित विधि से वेदी बनाकर वेदमंत्रों से शव को भस्म किया जाय! वेद–विरुद्ध कुछ भी न किया जाय। भस्म खेत में डाल दी जाय।"

महर्षि जी की उक्त इसी अभिलाषा के अनुरूप ही उनका अन्तयेष्टि संस्कार उनके भक्तों द्वारा किया गया था और उनके अस्थि–अवशेषों को अजमेर स्थित शाहपुरा के बाग की भूमि (खेत) में ही मृत्तिकासात् किया गया था।

ऊपर के इस उद्धरण को देने का अभिप्राय यह ही है कि जैसी विधि अपने अन्त्येष्ठि संस्कार के विषय में आचार्य प्रवर श्री महर्षि दयानन्द जी महाराज ने लिखि थी, वैसी ही वैदिक विधि से अन्त्येष्ति संस्कार करना पूर्णतः सर्वश्रेष्ठ है। इसी विधि को व्यवहार – क्षेत्र में उतारना आज के समय में आवश्यक ही नहीं अत्यावश्यक है क्योंकि यही विधि बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने में सहायक बनेगी, ऐसी मेरी धारणा है। पर्यावरण को शुद्ध–स्वच्छ रखना हम सब ही का सामाजिक दायित्व है पर्यावरण बचेगा तो हमारा अस्तित्व बचेगा, अन्यथा हमारा और हमारी आनेवाली पीढ़ी का विनाश निश्चित है। निकट भविष्य में पर्यावरण प्रदूषण के भयंकर परिणाम होंगे ही। पर्यावरण को शुद्ध तथा स्वच्छ बनाकर ही स्वस्थ एवं बलिष्ठ नागरिक सुखी, शान्त तथा आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

ऐसा नहीं कि महर्षि जी द्वारा बताई गई विधि से अन्त्येष्टि संस्कार करने वाले आज नहीं हैं, हैं और अवश्य हैं, जिसका केवल एक ही उदाहरण देना पर्याप्त समझूंगा जिसकी जानकारी मुझे अर्थात् इन पंक्तियों के लेखक को है। अभी पीछे उत्तर प्रदेश राज्य के अन्तर्गत बागपत जनपद के उसी ऐतिहासिक स्थान "वारणावत" (बरनावा), जहाँ पाण्डवों को जलाने के लिए दुर्योधन ने लाक्षाग्रह बनवाया था, जिसके पास फजलपुर सुन्दर नगर नामा गाँव में संस्थापित आर्यसमाज के मंत्री श्री विनोद कुमार आर्य के पूज्य पिता श्री आशाराम जी का अन्तयेष्टि संस्कार पूर्णतः वेद विहित विधि से ही आर्य सन्तानों ने 18 नवम्बर 2016 को खेत में किया।

दाहकर्म के तीसरे दिन 20 नवम्बर को आर्य पुरुषों ने खेत में जाकर चिता से अस्थिसंचय कर, उसी खेत में अस्थि अवशेषों को गड्ढे में डालकर पार्थिक अंशों में तो विलीन किया ही वहीं श्रद्धापूर्वक एक पौधा भी आरोपित कर दिया जिससे जगत का वातावरण शुद्ध होता रहे। भस्म भी खेत में ही बिखेर दी गई।

धन्य हैं ऐसी वैदिक सिद्धान्तसिक्त सन्तानें जो अपने सर्वश्रेष्ठ वैदिक सिद्धान्तों एवं परम्पराओं को व्यवहार–क्षेत्र में निष्ठापूर्वक उतार रही हैं और पर्यावरण के संरक्षण के सम्बन्ध में प्रेरणा की स्रोत भी बन रही हैं वो भी एक अच्छे पिता से मिले अच्छे संस्कारों के कारण से ही। किम् बहुना? अगर संस्कार–पद्धति के रहस्य को समझकर हर माता–पिता प्रण कर ले कि वे सन्तान में ऐसे ही संस्कारों का आधान करेंगे जिससे वे उनसे भी उत्कृष्ट–कोटि के हों, तो हर बीस–पच्चसीच साल के बाद एक नई ही सुसंस्कृत पीढ़ी का, एक नये ही सुसंस्कृत युग का आगमन होगा ही। जैसी सन्तानें होंगी वैसा युग होगा ही। माता–पिता तथा समाज के मस्तिष्क को बदलकर ही हिटलर ने बीस बरस मात्र में ही एक अद्भुत सुसंस्कारी युवा–पीढ़ी का निर्माण कर दिया था। यह नई पीढ़ी उन ही विचारों, संस्कारों का मूर्त–रूप थी जो जर्मनी के एक कोने से दूसरे कोने तक एक लहर की तरह ही बहने लगी थी।

काश! कहीं इस अपने आर्यावर्त्त देश में भी कश्मीर से कन्याकुमारी तक ऐसी ही सुसंस्कारी अद्भुत सन्तानें दिखाई पड़े और इसका जगद्गुरुत्व पुनः अपने वास्तविक और पुरातन स्वरूप में आ जाये। और वैदिक आर्य संस्कृति सभ्यता अपने पुरातन गौरवमय स्वरूप को धारण कर विश्व का पथ प्रदर्शन कर सके। ईश्वर हमारे राष्ट्रनायकों को इस सम्बन्ध में सुमति प्रदान करे–समीचीन वैसी ही जैसी कभी हिटलर महान् को प्रदान की थी।

–प्रियवीर हेमाइना,
–318, विपिन गार्डन, नई दिल्ली
मो. 7503070674

समाधिपाद

अथ योगानुशासनम् ।।1।।

शब्दार्थ – (अथ) प्रारम्भ किया जाता है (योगानुशासनम् – योगस्य अनुशासनम्) योग का शास्त्र।

सूत्रार्थ – योग के शास्त्र को आरम्भ किया जाता है।

भावार्थ – 'अथ' शब्द किसी विषय के आरम्भ को सूचित करता है। 'अनुशासन' एक पारिभाषिक शब्द है। किसी विषय की लक्षण, भेद, उपाय तथा फल सहित व्याख्या करना 'अनुशासन' कहलाता है। 'योग' शब्द भी एक पारिभाषिक शब्द है, जिसका अर्थ है– 'समाधि'। इस प्रकार सूत्र का भावार्थ यह हुआ कि आत्मबोध के इच्छुक व्यक्तियों के लिये समाधि के लक्षण, भेद, उपाय तथा फलों की व्याख्या करने वाले शास्त्र का आरम्भ किया जाता है।

जिज्ञासा – योग किसे कहते हैं ?

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ।।2।।

शब्दार्थ – (योगः) योग (चित्तवृत्तिनिरोधः–चित्तस्य वृत्तीनां निरोधः) चित्त की वृत्तियों का निरोध है।

सूत्रार्थ – चित्त की वृत्तीयों का निरुद्ध हो जाना योग है।

भावार्थ – 'चित्त' मन को कहते हैं मन में शब्द, रूप, रस, गन्ध तथा स्पर्श विषयों से सम्बन्धित विचाररूपी तरंगें निरन्तर उठती रहती हैं या काम, क्रोध, लोभ, मोह, द्वेष, भय आदि से युक्त एक भावदशा–सी बनी रहती है। विचाररूपी इन तरंगों तथा रागादि से युक्त इन भावदशाओं को ही 'वृत्ति' कहते हैं। जब मन में शब्दादि–विषयात्मक तरंगें तथा रागादि से युक्त ये भावदशाएँ निरुद्ध हो जाती हैं अर्थात् रुक जाती हैं, उस अवस्था का नाम 'योग' है अर्थात् 'समाधि' है।

जिज्ञासा – चित्त की वृत्तियों के विरुद्ध हो जाने पर आत्मा के स्वरूप में क्या घटित होता है? अर्थात् उस समय आत्मी की स्थिति क्या होती है–

वृक्षारोपण कीजिए

पानी और हवा शुद्ध रखनी ही होगी हमें,
इनका प्रदूषण बहुत संकट बढ़ाएगा ।
साँस तक लेना कठिन हो जाएगा प्यारे !
पीने वाला पानी भी नहीं मिल पाएगा ।।
यूं ही ये प्रदूषण अगर बढ़ता रहा तो,
मानव का जीवन नरक बन जाएगा ।
व्यवसायियों कर निगाह लगी पानी पर,
पानी भी अब बूँद बूँद मिल पाएगा ।।
पानी को प्रदूषित किया मानव ने ही,
नदियों में बहाकर ढेर सारी गन्दगी ।
कूड़ा करकट और शव भी बहाए है,
किया उन्हें दूषित जिनकी करनी थी बन्दगी ।।
वृक्ष काट काटकर जंगल मिटा दिए,
जड़े खोदीं हर अमृतमयी कन्द की ।
अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी खुद मारी है,
संकट में डाल दी है मानव की जिन्दगी ।।
काट काट वृक्ष फैला वायु प्रदूषण को,
करके दूषित जल न प्रकृति शोषण कीजिए ।
चाहते हो अगर सुरक्षित मानव जीवन,
तो बस प्रकृति का ही नित पोषण कीजिए ।।
शुद्ध पानी वायु हर दिन मिलता रहे,
उचित है यही कि वृक्षों का रोपण कीजिए ।
वृक्ष जो उपेक्षित है वही जल स्रोत प्यारे ,
उनका विशेष ध्यान दे पोषण कीजिए ।।

– डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल' 82 गुजरातियान, धामपुर, बिजनौर उ.प्र.

खुश खबरी एवं सूचना

नवनिर्मित श्री देवतीर्थ गंगा कन्या गुरुकुल रामकुटीर मकान नं. 352 ब्रजघाट गढ़मुक्तेश्वर हापुड़, उत्तर प्रदेश में निःशुल्क शिक्षा हेतु 5वीं, 6वीं, एवं 7वीं कक्षा में इच्छुक एवं जरुरतमन्द छात्राओं के प्रवेश हेतु सीमित स्थान उपलब्ध हैं। पहले आओ पहले पाओ के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा।
अतःशीघ्रतिशीघ्र सम्पर्क सूत्रःपर सम्पर्क करें। सतीश कुमार,
मो. 8800205731, आचार्य विकास तिवारी, मो. 9968059239

वेदप्रचार, श्रावणी पर्व एवं छात्रवृत्ति वितरण समारोहोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली–60 का हर वर्ष की तरह श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में वेदप्रचार, श्रावणी पर्व एवं छात्रवृत्ति वितरण समारोह 10 अगस्त से 13 अगस्त तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। लगातार चार दिनों तक श्री अंकित शास्त्री जी के मधुर भजनों का श्रवण किया गया और आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य राजू वैज्ञानिक एवं आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने वेद प्रवचनों के द्वारा सभी आर्यजनों को मन्त्र मुग्ध किया।

जिसमें सामवेदीय बृहद महायज्ञ प्रसिद्ध वैदिक के विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न किया गया तथा इसके अतिरिक्त इस महोत्सव पर समाज के कार्यकारिणी के सदस्य एवं उपप्रधान श्री सुरेश चुघ जी के सानिध्य में वेद एवं गीता के मन्त्र व श्लोकों की व्याख्या प्रतियोगिता कामेस्ट एवं नरिष्ट वर्गों में सम्पन्न की गई इसके अलावा पूर्णाहुति एवं समापन समारोह रविवार 13 अगस्त 2017 को आचार्य गवेन्द्र जी की अध्यक्षता में मुख्य वक्ता आर्य जगत के मनीषी डॉ. महेश विद्यालंकार जी के द्वारा गुरुकुलों एवं स्कूलों के छात्र एवं छात्राओं को जीवनोपयोगी अति महत्वपूर्ण बातों से अवगत कराया गया एवं प्रतियोगिता विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया एवं प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गऐ और आर्य समाज राजेन्द्र नगर की ओर कार्यकारिणी सदस्यों ने मासिक छात्रवृत्ति पाने वाले लग–भग 60 छात्रों को छात्रवृत्तियां प्रदान की सभी अतिथि विद्वानों महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त किया ।

–नरेन्द्र मोहन वलेचा (मंत्री)

घर–घर यज्ञ रचाएगें

हजारों ने किया वेदगांण में स्नान ।

आर्य समाज मन्दिर मॉडल टाउन नई दिल्ली के द्वारा त्रिदिवसीय वेदप्रकथा यज्ञ का अयोजन किया गया, यज्ञ के ब्रह्मा एवं वेदप्रवचन आर्य जगत् के युवा विद्वान् आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न किया गया।

– कृष्णदेव आर्य (मंत्री)

स्वतन्त्रता दिवस यज्ञापेवीत संस्कार सम्पन्न

आर्य समाज प्रताप नगर नई दिल्ली के द्वारा 14 अगस्त 2017 को स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में विद्यार्थियों का यज्ञापेवीत संस्कार सम्पन्न हुआ जिसमें आर्य जगत के राष्ट्रीय कथाकार आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी का क्रान्तिकारी उदबोधन हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. अनिल आर्य जी ने अपने विचारों से अवगत कराया है। इस अवसर पर आर्य समाज के गणमान्य लोग उपस्थित थे, प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– केवल कृष्ण सेठी (मंत्री)

हार्दिक आभार

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के कार्यों एवं नये प्रचारकों की नियुक्ति के लिए शुद्धि सभा की ओर से मेरी प्रार्थना पर आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–2 नई दिल्ली की ओर माह अगस्त–2017 में रुपये 10,000/– दस हजार रूपये की राशि शुद्धि सभा को प्रदान की गयी है इस आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए मैं आर्य समाज के संरक्षक श्री प्रियव्रत जी, प्रधान श्री सहदेव नांगिया जी, मंत्री श्री एस.के. कोहली जी, कोषाध्यक्ष श्री आर.एन. सलूजा जी, प्रधान श्री सहदेव नांगिया जी का आभार प्रकट करता हूँ, और आशा करता हूं कि शुद्धि कार्य के प्रगति के लिए भविष्य में भी अपनी आर्य समाज की ओर से आर्थिक सहयोग प्रदान करते रहेंगे। पुनः सभी अधिकारियों का धन्यवाद !

– चतरसिंह नागर (महामंत्री)

माह अगस्त 2017 के आर्थिक सहयोगी

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट–2, नई दिल्ली		10,000/–
आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
बिग्रेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर–15, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/–
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बगंलौर	मासिक	750/–
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री, शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्री शिव कुमार मदान जी, ट्रस्टी, जनकपुरी, नई दिल्ली	मासिक	200/–
श्रीमती राज सेठी जी, विजय नगर, दिल्ली	मासिक	100/–
श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	मासिक	100/–

श्रीमती नीलम खुराना जी द्वारा एकत्रित दान

श्रीमती वासन्ती चौधरी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	500/–
श्रीमती प्रेमलता गोतमी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		101/–
श्रीमती शुक्ला जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		100/–
श्रीमती प्रेम ढ़ीगरा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		100/–
श्रीमती कृष्णा दूबे जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	100/–
श्रीमती नीलम खुराना जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	100/–
श्री अर्पण हंस, पौत्र–श्रीमती नीलम खुराना जी, न्यू राजेन्द्र नगर		100/–
श्रीमती संतोष वहल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	100/–
श्रीमती प्रेम बजाज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		100/–
श्रीमती अमरजीत कौर बिज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		100/–
सुश्री मोना जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		100/–
बेबी स्वस्ति आर्या सुपुत्री डा. देवेश प्रकाश जी, आर्य महिला आश्रम	मासिक	100/–
श्रीमती आशा रानी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		100/–
श्रीमती शोभा आचार्य जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	मासिक	50/–
श्रीमती कैथरिन मैथ्यूज, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		50/–
श्रीमती निर्मल शर्मा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		50/–
श्रीमती कान्ता जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		50/–
श्रीमती इन्दू बिज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		50/–
श्रीमती उमा बिन्द्रा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		50/–
श्रीमती पुष्पा मिश्रा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		50/–
श्रीमती पुष्पा खनिजा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर		50/–

श्री देवराज अरोड़ा जी (फरीदाबाद) द्वारा एकत्रित त्रैमासिक दान

श्री मदन लाल तनेजा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	675/–
श्री देवराज अरोड़ा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	325/–
श्री विजय अरोड़ा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	300/–
श्री मदन छाबड़ा जी, मालवीय नगर, नई दिल्ली	300/–
श्री वेद प्रकाश जी, रोहिणी, नई दिल्ली	300/–
श्री अजय जी अरोड़ा, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	250/–
श्री संजय अरोड़ा जी, ओमैक्स/ओसाका सैक्टर–86, फरीदाबाद हरियाणा	250/–
श्री सुभाष अरोड़ा जी, सैक्टर–16 फरीदाबाद	225/–
श्री अनिल गुप्ता जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	225/–
श्री कृष्ण लाल टुटेजा जी, सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	150/–
श्री सुरेश जी भारत आप्टीकल्ज सैक्टर–16, फरीदाबाद, हरियाणा	150/–
श्री पवन अग्रवाल जी, औमेक्स हाईट्रक्स	150/–

श्रावणी पर्व वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज बिड़ला लाइन्स (कमला नगर) दिल्ली–7 का "श्रावणी पर्व वेद प्रचार" का कार्यक्रम 25.26.27 अगस्त 2017 को बड़े ही हर्ष उल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर पं. शिवपाल आर्य जी, एटा उ.प्र. के मुधर भजन हुए और वेद प्रवचन प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा. छविकृष्ण शास्त्री जी द्वारा किये गये। वेद कथा की सभी आर्य महान्नुभावों ने सराहना की और डा. छविकृष्ण शास्त्री जी का आभार प्रकट किया। – सुधीर चन्द्र घई (मंत्री)

स्वतन्त्रता सैनानी एवं प्रसिद्ध लेखक श्री उदयवीर 'विराज' जी का निधन

स्वतन्त्रता सैनानी, प्रसिद्ध लेखक, आर्य जगत सात्ताहिक पूर्व सम्पादक श्री उदयवीर 'विराज' जी का गत 4 अगस्त 2017 को 95 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। स्व. श्री बिराज जी सन् 1939 में निजाम हैदराबाद द्वारा बहुसंख्यको के अधिकारों को कुचलने के विरोध में किये गये आर्य सत्याग्रह में छह–छह माह के लिये तीन बार कारावास गये। उन्होंने यजुर्वेद तथा अथर्ववेद का अंग्रेजी में नौ खन्डों का अनुवाद तथा हिन्दी साहित्य में 60 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की। शुद्धि सभा एवं शुद्धि समाचार परिवार की ओर से दिवंगत पुण्य आत्मा विनम्र श्रद्धांजलि ।

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-09-2017 (pages 8) Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2015-17
Posting Date : 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाचार

सितम्बर – 2017

जीवन तब जीवन बनता है, जब जीवन का आधार मिले!

– डा0 जगदीश गांधी

जीवन तब जीवन बनता है जब जीवन का आधार मिले :– जब तक शरीर में आत्म तत्व रहता है तब तक ही हमारी आंखों में देखने की, कानों में सुनने की, मुँह से बोलने की, नाक से साँस लेने की, मस्तिष्क से विचार करने की क्षमता रहती हैं। अर्थात शरीर के सभी अंग आत्म तत्व रहने तक ही अपना कार्य करते हैं। शरीर से आत्म तत्व निकल जाने के बाद मनुष्य मृत हो जाता है। हमारे शरीर से आत्म तत्व निकल जाने के बाद शरीर का कोई वजन कम नहीं होता। सभी यह कहने लगते हैं कि अब इस शरीर में कुछ नहीं रहा। असली चीज जो आत्म तत्व के रूप में थी वह निकलकर चली गयी। इसलिए कहा जाता है जीवन तब जीवन बनता है जब जीवन का आधार मिले। अर्थात जीवन का आधार आत्म तत्व है। आत्म तत्व के बिना जीवन प्राणविहीन तथा आधारविहीन है।

परमात्मा से कटकर मानव जीवन आधारविहीन हो जाता है :– हमें यह ज्ञान होना चाहिए शरीर भौतिक है तथा परमात्मा आत्म तत्व के रूप में हमारी आत्मा में वास करता है। सही निर्णय लेने के लिए हमारा कनेक्शन परमात्मा की ओर से युग–युग में अवतारों के माध्यम से अवतरित पवित्र ग्रन्थों की शिक्षाओं से जुड़ा होना चाहिए। पवित्र ग्रन्थों की शिक्षाओं का पूरे मनोयोग से पालन करने से ज्ञानपूर्वक जीने की कला विकसित होती है। आत्मा का संबंध परमात्मा से जुड़ा रहता है तो जीवन में प्रकाश आ जाता है। परमात्मा से कटकर मानव जीवन आधारविहीन हो जाता है। अज्ञान के अन्धेरे में चला जाता है। सही और गलत का भान नहीं रहता। जीवन की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसका आंतरिक द्वन्द्व बन जाता है। भौतिक तथा सामाजिक जीवन में मनुष्य को हर पल निर्णय लेने पड़ते हैं। सही निर्णय पर जीवन की सफलता तथा गलत निर्णय पर जीवन की असफलता निर्भर करती है।

दुखों से भागना नहीं, बल्कि दुखों में जागना है :– आत्मा का जीवन तो एक अनन्त यात्रा है और संसार में मानव जन्म उसका एक पड़ाव मात्र है। संसार के दुखों से सभी भागना चाहते हैं और अपने जीवन से दुखों को भगाना चाहते हैं। हमें दुखों से भागना नहीं, बल्कि दुखों में जागना हैं। ऐसा करने से दुःख रोने, कलपने का साधन नहीं, बल्कि परमात्मा द्वारा प्रेरित और उन्हीं के द्वारा प्रदत्त जागरण का अवसर बनते हैं। इसलिए हमें परमात्मा से दुखों को सहन करने की शक्ति मांगनी चाहिए। जो प्रभुचिंतन करते हुए मरना जानते हैं, उन्हें ही परमात्ममिलन का अनंत सौभाग्य मिलता है।

मैं एक शान्ति प्रिय आत्मा हूँ :– हम परमात्मा का अंश हैं। मृत्यु के बाद हम शरीर से नहीं वरन् आत्मरूप में परमात्मा में मिल जायेंगे। परमात्मा शरीर नहीं है। वह काल चक्र से ऊपर है। हम अपने को आत्मा के रूप में देखने का अभ्यास निरन्तर करें। मानव जीवन शरीर की नहीं वरन् आत्मा की अनन्त यात्रा की कहानी है। हमें मानव जीवन में भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक जीवन संतुलित रूप से जीते हुए अपनी आत्मा की यात्रा सफलतापूर्वक पूरी करके परम धाम की ओर कूच करना है। परम धाम की परम शक्ति को अर्जित करने के लिए हृदय को शुद्ध, दयालु तथा प्रकाशित बनाने की कीमत चुकानी पड़ती है। शरीर आत्मा का वाहन है। शरीर को भौतिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक रूप से पूर्ण स्वस्थ बनाकर जीवन यात्रा के लक्ष्य को प्राप्त करना है।

परमात्मा का दिव्य ज्ञान पवित्र पुस्तकों में समाहित है :– महात्मा गांधी से राष्ट्रीय समस्याओं पर सलाह लेने के लिए पं0 नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना आजाद आदि उनके साबरमति आश्रम आते थे। महात्मा गांधी विचार–विमर्श के समय बीच में उठकर अपने प्रार्थना के कमरे में जाते थे। जहाँ सभी धर्मो की पवित्र पुस्तकें रखी थी। बापू पवित्र पुस्तकों की शिक्षाओं के प्रकाश में विभिन्न प्रकार की राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान खोजकर उन्हें बता देते थे। सभी पवित्र पुस्तकों गीता, त्रिपिटक, बाईबिल, कुरान, गुरू ग्रन्थ साहिब, किताबे अकदस, किताबे अजावेस्ता आदि का ज्ञान एक ही परमपिता परमात्मा की ओर से युग–युग में कृष्ण, बुद्ध, अब्राहीम, मूसा, ईसा, मोहम्मद, नानक, बहाउल्लाह जैसे दिव्य अवतारों के माध्यम से आया है। इन पवित्र पुस्तकों की शिक्षाओं को जीवन में अपनाने से मनुष्य फौलाद की तरह शक्तिशाली बन जाता है। मंदिर, मस्जिद, गिरजा, गुरूद्वारा किसी भी स्थान तथा किसी भी भाषा में प्रार्थना, इबादत, पूजा, पाठ करें उसे सुनने वाला परमपिता परमात्मा एक है। हम उसे ईश्वर, अल्ला, गॉड, प्रभु, वाहे गुरू आदि नामों से पुकारते हैं।

प्रत्येक बालक को एक संतुलित विश्व नागरिक के रूप में विकसित करना है :– जब से परमात्मा ने यह सृष्टि और मानव प्राणी बनाये हैं। तभी से परमात्मा ने उसे उसकी तीन वास्तविकताओं (1) भौतिक (2) सामाजिक तथा (3) आध्यात्मिक के साथ उत्पन्न किया है। अतः प्रत्येक बालक को तीनों प्रकार की अर्थात भौतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा देकर एक संतुलित विश्व नागरिक के रूप में विकसित करना ही शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य है।

मनुष्य एक पारिवारिक एवं सामाजिक प्राणी है :– सामाजिक शिक्षा : चूंकि मनुष्य एक पारिवारिक एवं सामाजिक प्राणी भी है, इसलिए प्रत्येक बालक को बचपन से ही ऐसी सार्वभौमिक शिक्षा स्कूल में दी जानी चाहिये जिससे कि वह समाज को सुन्दर बनाने के प्रति जागरूक हो सके। समाज व्यक्तियों का समूह होता है और जब सभी व्यक्ति मिल–जुलकर इस समाज में रहते हुए परामर्श के द्वारा समाज की एक सर्वमान्य व्यवस्था बनाते हैं तो इससे समाज के प्रत्येक सदस्य का लाभ होता है। परिवार हमारा लघु समाज है तथा इसी का विस्तृत रूप व्यापक विश्व समाज होता है। परिवार और समाज में जब सभी लोग मिलजुलकर रहते हैं तो उनमें आपस में प्रेम, सौहार्द एवं सहिष्णुता बनी रहती है क्योंकि वे सभी एक–दूसरे के कल्याण की सोचते हैं। इससे सभी का विकास होता है।

मनुष्य एक आध्यात्मिक प्राणी है :– आध्यात्मिक शिक्षा : आध्यात्मिक शिक्षा ही मनुष्य के पूरे जीवन का निर्धारण करती है। भौतिक शिक्षा मनुष्य को डाक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस. तथा राजनीतिज्ञ आदि तो बना देती है किन्तु आध्यात्मिक शिक्षा के अभाव में वह एक अच्छा इंसान नहीं बन पाता। जबकि परमात्मा ने प्रत्येक मनुष्य में शुद्ध, दयालु एवं ईश्वरीय प्रकाश भरकर ही इस दुनियाँ में भेजा है। किन्तु परिवार, विद्यालय एवं समाज इन ईश्वरीय गुणों को ज्यों का त्यों बनाये रखने और उन ईश्वरीय गुणों को और अधिक विकसित करने के बजाय अपनी भौतिक इच्छाओं तथा अज्ञानता को बच्चों में भरते हैं। इस प्रकार वे उसे स्वयं अपने लिए, अपने परिवार के लिए और समाज के लिए अनुपयोगी नागरिक बना देते हैं। अतः यदि बालकों में भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक तीनों गुणों को संतुलित रूप से विकसित नहीं किया गया तो बालक का पूर्ण विकास नहीं होगा और वह स्वयं अपने लिए, अपने परिवार के लिए तथा समाज के लिए एक समस्या बन जायेगा। अतः प्रत्येक बालक को सभी धर्मों की मूल शिक्षाओं को देकर परमपिता परमात्मा के आध्यात्मिक ज्ञान से जोड़ना चाहिए।

सभी पवित्र ग्रन्थों का ज्ञान एक ही परमात्मा की ओर से आया है :– बच्चों को बाल्यावस्था से ही सभी धर्मों के पवित्र ग्रन्थों गीता, त्रिपिटक, बाईबिल, कुरान, गुरू ग्रन्थ साहिब, किताबे–अकदस, किताबे–अजाबेस्ता का मूल ज्ञान देना चाहिए। बच्चे बाल्यावस्था से ही पवित्र गीता की सीख को धारण करें कि स्वभूत हिते रतः अर्थात समस्त प्राणी मात्र के हित में रत हो जाये। वह पवित्र त्रिपिटक के इस ज्ञान को धारण करें कि भेदभाव ईश्वरीय आज्ञा नहीं वरन् समता ईश्वरीय आज्ञा है। वह पवित्र बाईबिल के इस ज्ञान को धारण करें कि अपने पड़ोसी को भी अपने जैसा प्यार करें अर्थात हमें अपनी जाति, धर्म तथा राष्ट्र की तरह ही सभी जातियों, धर्मों तथा विश्व के लोगों से उसी तरह का प्यार करना है। वह पवित्र कुरान के इस ज्ञान को धारण करें कि ऐ खुदा सारी खिलकत को बरकत दें अर्थात हमारे हृदय में सारे संसार की भलाई की भावना हो। वह गुरू ग्रन्थ साहिब के इस ज्ञान को धारण करें कि त्याग ही सच्चा सौदा है। बहाई धर्म की पवित्र पुस्तक किताब–ए–अकदस के इस ज्ञान को बाल्यावस्था से बच्चे धारण करें कि हृदय की एकता से ही 'मानव जाति एक है, धर्म एक है तथा ईश्वर एक है' की परिकल्पना साकार होगी।

आधुनिक विद्यालय का सामाजिक उत्तरदायित्व :– आधुनिक जागरूक विद्यालय का सामाजिक उत्तरदायित्व है कि वह सुन्दर, स्वस्थ, समृद्ध, आनन्दित एवं सशक्त समाज के निर्माण के लिये समाज के प्रकाश का केन्द्र बने और अपने छात्रों को बचपन से ही (1) उद्देश्यपूर्ण भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक ज्ञान की संतुलित शिक्षा दे, (2) धर्म के वास्तविक उद्देश्य अर्थात एकता के महत्व से परिचित कराये तथा (3) कानून और न्याय पर चलने से सम्बन्धित मौलिक सिद्धान्तों का बचपन से ही छात्रों को ज्ञान कराये तथा उन पर चलने का अभ्यास कराये।

शेष पृष्ठ 1 का...

जानते और समझते हैं। क्या रावण आदि के पुतलों को जलाने वालों का अपना दामन पाक–साफ है? आज अपने ही घरों में किसी बहन–बेटी की इज़्ज़त सुरक्षित नहीं है। बड़े–बड़े राजनेताओं उच्च अधिकारियों और तथाकथित धर्म गुरुओं और सन्त–महन्तों की करतूतों के कारनामे आये दिन पढ़ने–सुनने को मिलते हैं। आम जनता में आज हमारी बहन–बेटियों के साथ दिन–दहाड़े बलात्कार, हत्यायें और न जाने कैसे–कैसे अमानुषिक कुकृत्य होते रहते हैं। यह सब देखकर शायद किसी कवि ने यह ठीक ही कहा है कि–

घर–घर में आज रावण बैठे हैं, इतने राम कहाँ से लाऊं।

भारत की इस पावन धरा पर कभी देवता भी जन्म लेने को तरसते थे, किन्तु आज यहाँ चहुँ ओर असुरों का ताँडव नज़र आ रहा हैं, जिससे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और योगेश्वर श्री कृष्ण की धरा पर आज चारों ओर अनाचार, दुराचार एवं पापाचार की बाढ़–सी आ गई है। परम दयालु प्रभुदेव से हमारी यही प्रार्थना है कि वे इन पापाचारों से बचाने के लिए सबको सद्बुद्धि प्रदान करें ताकि सम्पूर्ण देश में सर्वत्र सुख–शान्ति का साम्राज्य हो। इसी भावना और कामना के साथ। इति ओम् शम्।

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह–सम्पादकः डॉ. देवेश प्रकाश आर्य